सरल और मिश्र प्रत्यय

अनुभववाद के अनुसार ज्ञान निर्णयों की समष्टि है| निर्णय का निर्माण प्रत्ययों से होता है| इन प्रत्ययों की प्राप्ति इंद्रियों की अनुभूति से होती है| जॉन लॉक ने प्रत्ययों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया है- एक सरल प्रत्यय तथा दूसरा विश्व या जतिन प्रत्यय| लॉक का कहना है कि ज्ञान के प्रारंभ में प्रत्यय सरल और एक दूसरे से अलग होते हैं| इन सरल प्रत्याशियों को प्राप्त करने में हमारा मन या बुद्धि निष्क्रिय रहती है| हमारा मन प्रत्ययों को जोड़ कर मिश्र प्रत्यय का निर्माण करता है| उदाहरण के लिए जैसे ' मेज गोल है' निर्णय ज्ञान का एक उदाहरण है, जिसका निर्माण 'मेज' तथा ' गोलपन' कि प्रत्याशियों को मिलाने से बना है| मिश्र या जटिल प्रत्ययों के निर्माण में मन सक्रिय हो जाता है| जैसे लाल फूल एक मिश्रित प्रत्यय है| इसमें लाली, सुगंध तथा कोमलता आदि के प्रत्यय मिले हुए हैं इन्हें इंद्रियां फूल के रूप में प्राप्त नहीं करती बल्कि अलग-अलग प्राप्त करती हैं| किसी भी प्रत्यक्ष के एक प्रत्यय को हम सरल प्रत्यय कहते हैं| इन सरल प्रत्ययों को मिलाजुला कर जतिन प्रत्यय बनाए जाते हैं| इस प्रकार प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं- सरल (simple) तथा जटिल (complex)| ज्ञान इन्हीं दोनों प्रकार के प्रत्ययों से निर्मित होता है|

जॉन लॉक के अनुसार ज्ञान का मूल स्रोत इंद्रिय अनुभव है| उन्होंने अनुभव के दो प्रकार पर लाए हैं अर्थात बाह्य प्रत्यक्ष और आंतरिक प्रत्यक्ष| | वाह यह प्रत्यक्ष पांच ज्ञानेंद्रियों के संवेदन के द्वारा होता है जब की आंतरिक प्रत्यक्ष अंतः करण की स्वसंवेदन द्वारा होता है| संवेदन और स्व संवेदन के द्वारा ही ज्ञान आत्मा में अर्थात मन में प्रवेश करता है लॉक के अनुसार मन कोरे कागज, या साफ स्लेट, या अंधेरे कमरे की तरह है जिस पर संवेदन और स्वसंवेदन अनुभव से ज्ञान रूपी अक्षर मन में लिखा जाता है| इस तरह बुद्धि का प्रत्येक प्रत्यय इंद्रिय अनुभव से ही प्राप्त किया जाता है| संवेदन और स्व संवेदन ही ज्ञान के दो द्वार हैं| यह दोनों एक साथ नहीं खुलते बल्कि एक-दूसरे के बाद खुलते हैं| इनमें संवेदन प्रथम और प्रधान है क्योंकि प्रत्यक्ष ज्ञानेंद्रियों और वस्तुओं के संसर्ग से उत्पन्न होता है| इसलिए संवेदन की प्रक्रिया के बाद स्व संवेदन बाद में होता है|

इस प्रकार लॉक के अनुसार हमारा ज्ञान प्रत्ययों से बनता है| सरल प्रत्यय संवेदन से या स्व संवेदन से या दोनों से आते हैं| सरल प्रत्यय मौलिक हैं| विधायक प्रत्यक्ष या आंतरिक प्रत्यक्ष या दोनों से प्राप्त किए जाते हैं| सरल प्रत्यय चार प्रकार के हैं

1. जो इंद्रियों के संवेदन द्वार से मन में प्रवेश करते हैं, जैसे गंध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द;
2. जो एक से अधिक इंद्रियों के संवेदन द्वार से मन में प्रवेश करते हैं, जैसे विस्तार, आकार, गति आदि|

3. जो अंतःकरण के स्व संवेदन द्वार से मन में प्रविष्ट होते हैं जैसे स्मृति, संदेह, विश्वास, संकल्प आदि|

4. जो बाह्य इंद्रियों के संवेदन और अंतकरण के स्वसंवेदन, इन दोनों द्वारों से आत्मा में आते हैं, जैसे सुख-दुख, सत्ता , शक्ति, एकता, क्रम आदि|

इन चार प्रकार के सरल प्रत्ययों से ही हमारा सारा ज्ञान बना है| जैसे परिमित अक्षरों से अनंत वांग्मय का निर्माण होताहै, वैसे ही इन सरल प्रत्ययों से समस्त मानव ज्ञान बनता है|

मिश्र प्रत्यय सरल प्रत्ययों के मिश्रण से बनते हैं| इन प्रत्ययों के मिश्रण करने में मन सक्रिय होता है, किंतु इनको उत्पन्न नहीं करता| जिस प्रक्रिया से मन सरल प्रत्ययों द्वारा मिश्र प्रत्यय बनाती है, उसकी अवस्थाएं हैं|

1. निष्क्रिय रूप से संवेदन या स्व संवेदन या दोनों के द्वारा सरल पक्षियों का ग्रहण;

2. इन प्रत्ययों का धारण, क्योंकि विस्मृति होने पर फिर इनकी रचना संभव नहीं;

3. इन प्रत्याशियों के परस्पर पार्थक्य बोध का उदय;

4. इन प्रत्याशियों का परस्पर संतुलन,

5. इन प्रत्ययों का मिश्रण और

6. इनका सामान्यकरण और नामांक करण| सामान्य करण और नामांकरण मन की क्रिया है|

मिश्र प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं- पर्याय या प्रकार, द्रव्य और संबंध| पर्याय वह मिश्र प्रत्यय हैं जो उन सरल प्रत्ययों से बनते हैं जिनकी स्वतंत्र सत्ता नहीं होती और जो अपनी सत्ता के लिए द्रव्य पर निर्भर रहते हैं | पर्याय भी दो प्रकार के होते

Scanned by TapScanner

सरल और मिश्र - एक प्रकार के सरल प्रत्ययों से बने हुवे पर्याय सरल हैं, और विभिन्न प्रकार की सरल विज्ञानों से बने हुए पर्याय मिश्र हैं| आकार, स्थान, दूरी, निकटता आदि देश के सरल प्रत्ययों से बने हुए सरल पर्याय हैं| पल,घंटा, दिन, पक्ष , मास आदि काल के सरल प्रत्यय से बने हुए सरल पर्याय हैं| सौंदर्य रंग आकार आदि विभिन्न प्रकार की सरल प्रत्ययों से बना हुआ मिश्र पर्याय है| द्रव्य के प्रत्यय वे मिश्र प्रत्यय हैं जो उन सरल प्रत्ययों से बनते हैं जो स्वतंत्र वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं| वास्तव में हम द्रव्य को नहीं जान सकते; हम केवल उनके गुणों को जानते हैं| गुणों के कारण हम उन गुणों के आधारभूत द्रव्य का अनुमान कर लेते हैं| प्रत्यक्ष द्रव्य का नहीं होता| प्रत्यक्ष द्रव्य के गुणों का ही होता है|

संबंध के प्रत्यय वे मिश्र प्रत्यय हैं जिनकी, सरल प्रत्ययों के आधार पर, मन स्वयं कल्पना कर लेती है| यह प्रत्यय किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं करते| इन प्रत्ययों मैं कार्य कारण संबंध का प्रत्यय मुख्य है|

इस प्रकार लोक ने सरल और मिश्र प्रत्ययों की चर्चा की|

Scanned by TapScanner